भारत में कृषि विकास

AGRICULTURAL DEVELOPMENT IN INDIA

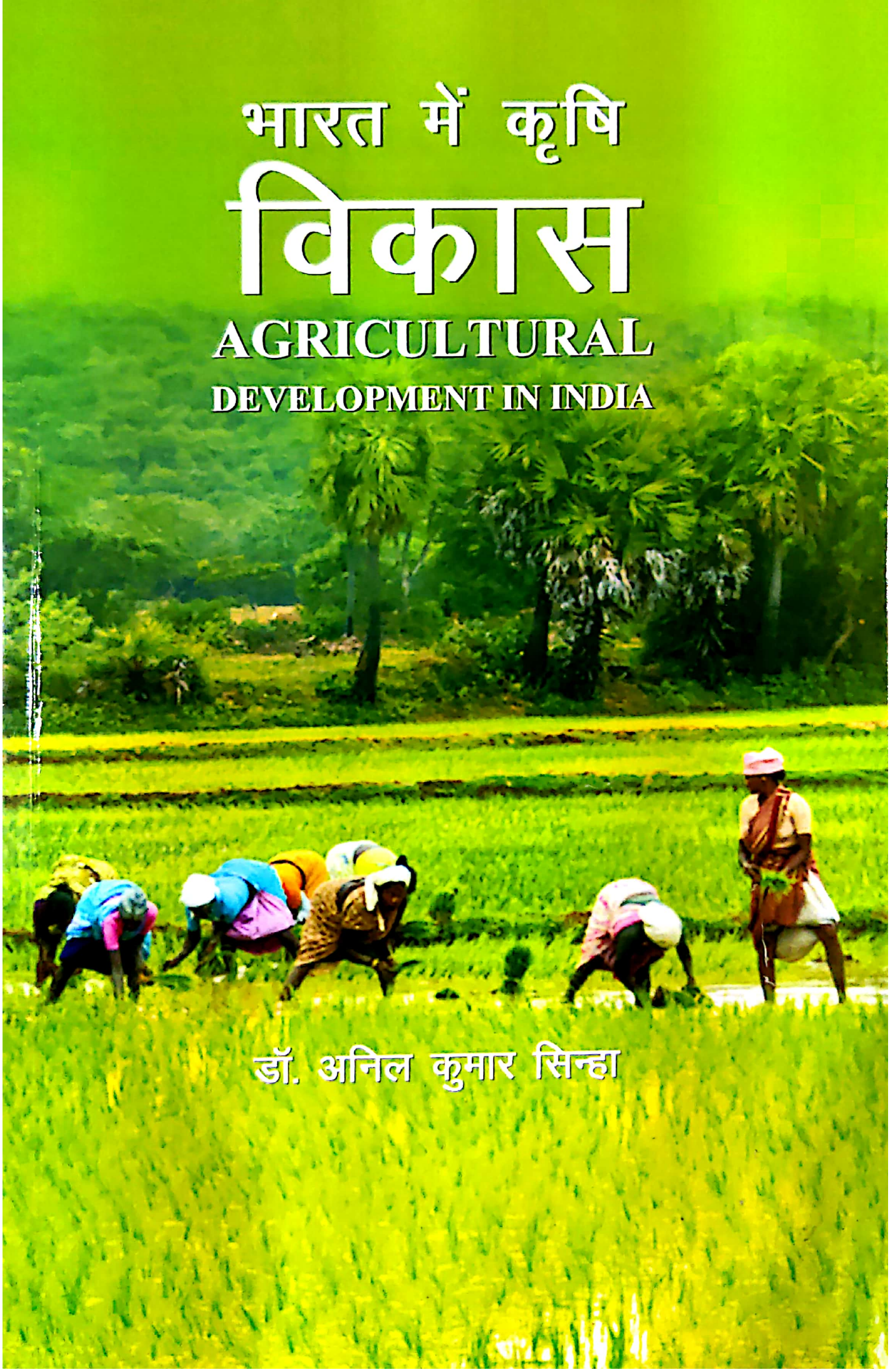

डॉ. अनिल कुमार सिन्हा

Scanned with OKEN Scanner

भारत में कृषि विकास

Agricultural Development in India

डॉ. अनिल कुमार सिन्हा

पी–एच.डी. (भूगोल)

सह–प्राध्यापक भूगोल एवं कोऑर्डिनेटर एन.एस.एस.

संत गहिरा गुरू विश्वविद्यालय सरगुजा, अम्बिकापुर, छ.ग.

asian press BOOKS

Scanned with OKEN Scanner

© अनिल कुमार सिन्हा (2021)

सर्वाधिकार सुरक्षित

सभी अधिकार लेखक द्वारा आरक्षित इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है, एक पुन: प्रणाली में संग्रहीत या किसी भी रूप में या इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, लेखक की पूर्व अनुमति के बिना प्रेषित नहीं किया जा सकता है।

यद्यपि यहां पर दी गई जानकारी की सटीकता को सत्यापित करने के लिए हर सावधानी बरती गई है, लेखक और प्रकाशक किसी भी त्रुटि या चूक के लिए कोई जिम्मेदारी नहीं मानते हैं। किसी भी क्षति के लिए कोई दायित्व नहीं लिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप निहित जानकारी का उपयोग किया जा सकता है।

पहली बार हिंदी में **August 2021** में प्रकाशित

PUBLISHER
ASIANPRESSBOOKS
612,SALTEEPLAZA,6THFLOOR,
1/GKHUDIRAMBOSESARANI
JESSORE ROAD,KOLKATA-700080
MOB:7001813717
www.asianpress.in

TYPE SETTING:Tania Koley

ISBN:978-93-90970-13-1

Price: ₹350/-

Scanned with OKEN Scanner

भारत में कृषि विकास
Agricultural Development in India

अनुक्रमणिका

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	प्रस्तावना	1
1	**भारत में कृषि विकास की प्रवृति**–कृषि का उद्भव, ऐतिहासिक काल में कृषि का स्वरूप, औपनिवेशिक शासन काल में कृषि विकास का स्वरूप, भारत का भौगोलिक परिचय।	5
2	**भारत में भूमि उपयोग**–भूमि उपयोग की संकल्पना, भारत में सामान्य भूमि उपयोग– वन भूमि, कृषि हेतु अनुपलब्ध भूमि, अन्य अकृषित भूमि,परती भूमि, शुद्ध बोई गयी भूमि,द्वि फसली भूमि।	16
3	**भारत में फसल प्रतिरूप एवं उत्पादकता का स्तर**–खाद्यान फसले–धान, गेहूँ, अन्य अनाज अथवा मोटे अनाज, मक्का, ज्वार,बाजरा,रागी,जौ,दलहनी फसलें।	29
4	**भारत में व्यावसायिक तथा मुद्रादायिनी फसलें**–तिलहन फसलें– मूंगफली, राई एवं सरसो, सूर्यमुखी, कपास, पटसन या जूट। बागाती कृषि –चाय, काफी अथवा कहवा, प्राकृतिक रबड, गन्ना, तम्बाकू, अन्य व्यावसायिक फसलें ।	49
5	**भारत में कृषि सम्बद्ध क्रियाओं का विकास**– पशुपालन– गाय, बैल, भैंस, भेंड, बकरी, कुक्कुट पालन, भारत में डेयरी विकास, मत्स्य पालन ।	66
6	**कृषि अवस्थापना सुविधाएँ**– विद्युतीकरण,परिवहन एवं संचार व्यवस्था,कृषि विपणन, क्रेडिट और वित्तीय संस्थाएँ,कृषि उपजों का भंडारण एवं शीतगृह ।	77

Scanned with OKEN Scanner

7	**भारतीय कृषि के सामाजिक पहलु**– भूस्वामित्व एवं जोताकार, भूमि सुधार कार्यक्रम का क्रियान्वयन ,श्रम की उपलब्धता।	88
8	**कृषि उत्पादकता प्रबंध**– सिंचाई का विस्तार, उर्वरक, उन्नतशील बीज ,कृषि मशीनीकरण, कीटनाशकों का प्रयोग।	107
9	**भारत में हरित क्रांति एवं कृषि का नियोजित विकास**–हरित क्रांति–हरित क्रांति का प्रादुर्भाव, हरित क्रांति के तत्व, कृषि क्षेत्र पर प्रभाव–कृषि उत्पादों की उत्पादकता में वृद्धि , कृषि उत्पादन की मात्रा वृद्धि, कृषकों की आय असमानता में वृद्धि , कृषकों की आय में राज्यवार असमानता में वृद्धि, हरित क्रांति का कृषि श्रम पर प्रभाव पारिस्थितिकी तथा पर्यावरण पर प्रभाव। **पंचवर्षीय योजना अंतर्गत कृषि विकास का स्वरूप**– प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर बारहवीं पंचवर्षीय योजना तक कृषि का विकास ।	135
10	**भारत में कृषि अनुसंधान, नवाचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी**– भारत में कृषि अनुसंधान प्रणाली , भारतीय कृषि में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका।	154
11	**टिकाऊ कृषि विकास की चुनौतियाँ**–जलवायु परिवर्तन एवं भारतीय कृषि,, जैविक कृषि तंत्र एवं टिकाऊ विकास ,स्मार्ट कृषि की प्राथमिकताएँ।	168
12	**भारतीय़ कृषि – विश्व व्यापार की प्रवृत्तियाँ**–भारत का निर्यात व्यापार, कृषि उत्पादवार अंतर्राष्ट्रीय निर्यात व्यापार,कृषिगत आयात,कृषि उत्पादों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत का स्थान।	190
13	**भारत में कृषि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन एवं नियोजन की रणनीति**–कृषि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन, भारत में कृषि विकास नियोजन।	195
	संदर्भ ग्रन्थ सूची (BIBLIOGRAPHY)	211

Scanned with OKEN Scanner

आर्थिक जीवन का आधार, रोजगार का प्रमुख स्रोत तथा विदेशी मुद्रा अर्जन का माध्यम होने के कारण कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारशिला कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। देश की बहुसंख्यक आबादी कृषि एवं कृषि सम्बद्ध क्षेत्रों से ही अपना जीविकोपार्जन कर रही हैं। कृषि के विकास पर ही देश की सम्पन्नता निर्भर है। कृषि उत्पादकता कई कारकों पर निर्भर करती है। इनमें भूमि,पानी,बीज, उर्वरकों की उपलब्धता और गुणवत्ता,स्टोरेज एवं मार्केटिंग, कृषि ऋण एवं फसल बीमा की सुविधा और इंफ्रास्ट्रक्चर इत्यादि शामिल हैं। भारत में कृषि के विकास का स्वरुप कालानुक्रम में परिवर्तित होता रहा है, अतः उसका स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण न सिर्फ अकादमिक ज्ञान अपितु क्षेत्रीय विकास एवं नियोजन के लिए भी उपयोगी होता है।

प्रस्तुत पुस्तक **भारत में कृषि विकास**, अंतर्गत कृषि की दशा एवं दिशा के प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ कृषि उत्पादन और पैदावार के शास्वत (Sustainable) पक्षों को भी विश्लेषित किया गया है।

डॉ. अनिल कुमार सिन्हा, उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ शासन मे भूगोल विषय के सह–प्राध्यापक हैं एवं वर्तमान मे प्रतिनियुक्ति पर संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय सरगुजा, अम्बिकापुर छ.ग. मे कोऑर्डिनेटर एन.एस.एस. के पद पर कार्यरत है। आपकी स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं मे 31 वर्षों के अध्यापन अनुभवों के साथ–साथ अनेक यू.जी.सी. की शोध परियोजनाओं, राष्ट्रीय सेमिनार व राष्ट्रीय कार्यशालाओं के संचालन का अनुभव है। आपके मार्गदर्शन मे 05 छात्रों को पी–एच.डी.शोध उपाधि प्राप्त हो चुकी है एवं 03 शोध छात्र अध्ययनरत है । अब तक आपके 31 रिसर्च पेपर्स अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय ज्योग्राफिकल जर्नल्स मे एवं एक पुस्तक भारत में जल संसाधन विकास एवं नियोजन प्रकाशित हो चुका है।

asian press BOOKS

ISBN: 978-93-90970-13-1

9 789390 970131

MRP: ₹350/-

Scanned with OKEN Scanner